धनंजय वेदाचारी

शिखर चोटी तक ना पहुंचो तो, बस पास पहुंचना भी हार है।

कोई रस ना मिले लेखनी को तो; कहती तुझे धिक्कार है।।

बस श्रेष्ठतम या सतत संघर्ष, द्वंद्व निरंतर है अविराम।
शेष-क्षुधा उदर या यश की, बन बैठे हैं दूजे काम।।

ऐसे भूखे की हालत, शब्दों में ना पिरोया जाए।
यही अग्नि हो जिसके भीतर, बस वही समझ पाए।

धनिकों की दशा देखके, धन से भय लग रहा।
जीवन सुधार की है ये प्रमुख कड़ी, इस बात में संशय जग रहा।।

अविनाशी किसी पारसमणि से, मुझ लौह अंश को मिलना है।
अन्यथा अपनी ही जड़ता से, जंग लगके आखिर मिटना है।।

उपेक्षा के पात्र में भी, न बात कोई अपमान सी।
बस पूर्ण सामर्थ्य जग जाए, जितनी स्वयं से अपेक्षा की।।

केरल

राह में ये जा रहा पथिक है।

बिन जाने क्या भूल क्या ठीक है।
स्मृति में युगों से, जो है जुटाए
दग्धबीज करके, आ उसे अब जलाएं।।

न जलाया इसे तो, जल ही जाएंगे हम
काटते ही रहेंगे यूं, जाने कितने जनम।
क्षण क्षण विकारें, है बढ़ती मनस में
वही दौड़ती है, वाक्, कर्म और नस में
काया की खातिर तो लाखों कमाया
चेतन की खातिर भी, तो कुछ कमाएँ
स्मृति में युगों से, जो है जुटाए
दग्धबीज करके, आ उसे अब जलाएं।।

सीढ़ी संघर्ष का तो, चढ़ना अभीष्ट है
आनंदमयकोश के ये साधन, अभी लगते क्लिष्ट है
क्षणिक सुख के आदी को, ये कदापि न भाए
स्मृति में युगों से, जो है जुटाए
दग्धबीज करके, आ उसे अब जलाएं।।

इस बार भी थे, तुम आस पास ही कहीं

पर मैं जानता था, अभी समक्ष दिखोगे नहीं
दर्जनों पत्र संदेश के तेरे नाम लिखे
पर तुम हो कि, उत्तर लिखोगे नहीं।।

आहट देकर भी कुछ कहते नहीं
संग होकर भी संग रहते नहीं
घर द्वार से तो जैसे वंचित हो
फिर भी तुम भटकते नहीं।।
संवाद तो अक्सर होता है
बस शब्द मेरे ही रहते हैं
अभी अयोग्य हूं तुझको पाने को
यही अंतः के भाव कहते हैं।

होते हैं हम जब समीप तो
काल का चक्र जड़ हुआ
मैं, वो मैं रहता नहीं और
सब आस पास बेधड़ हुआ।।

 ISSN:2583-8849